—६६६

No. क

Title गर्भ गीता

Author

Extent २८ पत्र Age

Subject अध्यात्म (वेदान्त)

॥श्रीगणेशायनमः॥ गर्भगीताप्रारं
भः॥ अर्जुनश्रीकृष्णभगवा
नजीपहलिप्रसकरैहै॥पाव
पुन्नकोविचारहैन॥श्रीकृष्ण
भगवानजीकाबचनहै॥जो·

गी०
१

अतोरसगर्भगीताकाविचा
रकरैहै॥सोप्रकृषबड्डरोगार
भमैनआवै॥अर्जुनउवाच॥है
श्रीकृष्णभगवानजी॥गर्भवि
षेजोआवैहैसोकिसदोतक

रआवैहै । हेप्रभुजीजववजमते
है । तवइसकोजगाआदिक
रोगलगतानाहै ॥ फिरमरतेहो
नाहै ॥ हेस्वामीउहकोनकरद
मैहै ॥ जिसमेतेपहजीववजनम

ग॰ २

मरततेरहितहोवै ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ हेअर्जुनईहजो
मानुषदेहैसोअधिकारक
है ॥ ब्रह्मसंसारकेपाक्रिनी:
साधधीनकरताहै ॥ ब्रह्मं

सकोपह्रीचितनवतारहितो
है॥ कैरहपदारथमैपाश्रा
है॥ अकरहपाउगा॥ रहचित
वतारसप्राणीकेमनतेउ
तरतोतहो॥ आठपदरामा

गी. ियाकोहैमांगताहै॥ यावइता
३ जीवनामांगताहै॥ ईतावाता
करकेबांरबारजनमताअ
3 नारहैताहै। गर्भविषेइख
पावताहै॥ अर्जुनवाच॥ हेश्रीकृ

सभगवानजो॥ इहमनमसता
॥ हाथीकेस्याहै॥ नसलाासको
सकतोहै॥ इहमनपंजाकेवस
है॥ कामक्रोधलोभमोहअहंका
रअजो इनपाचोमेमहकारः

ग
४

वऊनवलीहै॥ सोकवाजतत
है॥ जिसकरमनवसहोईजी॥
श्रीभगवानुवाच॥ हेअर्जनरह
मन॥ निश्चैकरहाथीकोरमा
ईहै॥ तिलाईसकोसकतीहै

मनपंजाकोवसहै हंकारइनो
मैंश्रेष्टहै ॥ हेअर्जुनजैसेहा
थीकुंडेकेवसहोताहै ॥ सोम
नहाथीकेवसकरनेकोमि
यानकुंडाहै ॥ हंकारकरनेते

ग· इहजीवनरकमैंपड़ताहै॥
५ अर्जुनोवाच॥ हेश्रीकृष्णभ·
गवानजीएकजनमारेताम
5 केलीपवनसंगफिरताहै॥
एकवैरागोभ्रष्टहै॥एकय

मिकरतेहैं॥ तिनाविषेंकैसे
जानीयें॥ जोवेसमवदे॥ श्रीभ
गवानुवाच॥ हेअर्जुनयेकमे
रेनामलीयेवनोमेफिरतेहैं॥
एकसंन्यासीकहावतेहैं॥

ग॰ ६

एकसिरत्रजटाबांधतेहै।
एकभसमलगावतेहै॥ए
कतोरयकरतेहै॥तिनामे
हमनहो॥काहेतेतिनावि
षेग्रहंकारहै॥इनकामेरा

दर्शन दुर्लभ है ॥ अर्जुन उवाच ॥
हे श्रीकृष्ण भगवान जी उह क
वन पाप है जिस करके सत्री
मर जाती है ॥ अरु वह कवन
पाप है जिस कर पुरुष मरते है

ग. प्रतिभ्रमकौनपापतेहो
७ ताहै॥श्रीभगवानुवाच॥देत्र
जैनजोपानीकेसैतेकर
जउठावनाहै॥अरुदेतानहो
इसपापकराइसक्षीमरेहै॥त्र

रुजोकिसीकोअमानतरषी
है॥१॥ह्रौपचा१लितेहै॥तिता
केअमरतेहै॥अरुजोकिं
सीकाकारजाकिसेणोचरष्षा
१पडेजवानीकहैमेनराका

ग.
८

रजिसभतोंतेपदिलेकरोंगी
जवसमाग्राईपडे।तेवातिह
ककारजातहीकरते॥४॥समप
पतेनग्रंहकहोनाहे॥१हव
डेपापहै॥ग्रजेनपसकेंहै

हे श्रीकृष्ण भगवानजी कोन

पाप ते मानुष्य स्त्री वेरोगी र

हित है ॥ किस पाप ते गर्भ का

जन्म पावना है ॥ स्त्री का

जन्म उडुका जन्म किस पा

ग॰ ९

पकरणा ६ है । अथ विलीका
जनम के मपापती होता है
श्री भगवान जी कहै है अर्जु
न जो मानष कंम्या को पदा
रपा लेते है ॥ अथ माघ वाल

णके। दोतोबेहै सेभाव। घसरा
रोगी रहे ने है ॥ श्रीकृजो विसैवि
करा वासु ते मदरा पानक
रने है सोइ इं काजन मपाव
ने है ॥ श्रीकृजो फूटो गावाहैभ

गा० रनैहै। कूडीमांघभरनैहै॥ मोरी
१० काजनमफाबनैहै॥ रसोइबता
किरापरलिष्यापणालिनैहै
पोछिपरमैष्परघोयरनैहै॥
दानकरसोविलोकाजनम

पावतेहै॥ अरुसत्रीकाजनम

पावतैहै॥ अरुजोमानुषश्राः

पतीकुठीवसनतदानकरते

है सोरुसत्रीकाजनमपावते

है॥ पापुलामऔरनहावैहै॥

ग. पेहफनमकदीपानहौ॥ख
॥ जेनपछेहै। हेश्रीकृसभगावा
नजी॥ पकमानघाकोनमख
वृतीहीयाहै॥ तिनकोनपत
कीयाहै॥ पकनाहीहायीची

उद्दीपै है। तिनको न भुवनकीया
है। श्रीभगवानकहै है। देवजैत
जिनामवर्णादानकीख्याहै। सो
तिनकोहार्योदोउँवाहनमि
लतेहै। कंत्यादानपरमेश्वर

ग्र· नमितकरैहै॥ ग्रंथकाजनम
२२ पावतेहे॥ हे भगवानजी जिन
नेइहवाचेउ देहुहे॥ तिनकेउत
पनकीयाहे॥ एकनाघासन
नेहे॥ एकविद्यावानहे तिन

कौन पुन कीया है ॥ देखजें न जि
ना अन्नदान कीया है ॥ तिनके
मंदर स्वरूप होवे है ॥ जिना वि
द्या दान करी सो विद्यावान हो
ने है ॥ जिना स्नान गंगा की सेवा ·

ग.
१३

करीहै सोप्रभुवातेह्नोतेहै। हे
भगवानईकनाकोपनना॰
लपीनह्नोवेहै। १कर३हीस्त्रा
मेयीनकरतेह्नैतिनकोको
नगातेहै॥ हेप्रभुजीन॥ राजपाट

13

धनाःसत्रोघासभनासस्तेपहै ।
मेरीभगानकानासनहीं ॥ हैभ
गवानराजपारदकिसधरमने
मिलेहै ॥ विद्याकोनधरमने
मेलेहै । हैश्रजेनजोपालीश्री

ग. १५

काशीमैनिष्कामभगततप
करतेहै॥ देहत्यागतेहै सोताका
होताहै॥ जोग्रहकीसेवाकरे
सोविद्यावानहोवैहै॥ हेभग
वानपकवानाकोयथनस्त्राचितहै

15

मिलता है। एकमारी आवल
रोग नेरा दिन होवे है॥ सो कोन
धुनते॥ कै एक्रै नाजिना उपव
दान कीता है उनको धन अ·
चिंतही मिलता है॥ जिनाप

ग· रमेश्वरश्रायापराई।याकाराज
१५ सवारीयाहै॥सोरागतेरहित
होतेहै॥हेभगवानकोनपा·
13 पतेश्रमलीहोवेहै॥बालाके
नपापते॥कृषीकोनपापते

होवेहै। हे अर्जुन जो अपनी कु
लकी। स्त्री सें गमन करते है
सो अप्रमली होती है॥ जिना गुरु
सिं विद्या पढी अरु मंत्र जा
नी है सो वाले होवे है॥ गुरु को

ग· पवञापापहै॥ जिनगोघात
१६ करीसोकुष्टीहोतेहै॥ १६ जन·
नीकवीनहीमूकनी॥ १७ भग
16 वानजी॥ एकनाकीदेहीमेर·
कतकावलहोताहै सोकोन

पापते॥ पकटीद्रोहोवैहै॥ पक
नाकोघरडवाउहोताहै॥ पक
श्रेयहोतेहै पिंगलेकोनपाप
तेहोतेहै॥ पकवालविधवाहो
तेहैकोनापापतेहोतेहै॥ हेत्र

ग· जैनजोसदाक्रोधवानरहते
१८ हैतिनकोरकतविकारहोते
है॥जोकुचीलरहितेहैसोद
17 रिद्रीहोतेहै॥जोकुकर्मीचा·
लागकोदानदेतेहै॥तिनको

घाडेवाऊ हेतै है ॥ जो परार्इ इस
त्री को तैसे देषते है ॥ गुरु की
सत्री से कुहष करी है ॥ सो ग्रंध
होता है ॥ जिना गऊ ब्रालण को
लत मारे है ॥ सो लनघडी ली को

ग. नीहैवे॥लंगड़ापिंगलाहोते
१८ है॥जोरस्त्रीअपणेघसमके
छोड़परापेपुरुषोसेसंगक
रतीहै॥सोबालविधवाहोती
है॥हेभगवानहेश्रीकृष्णजी

तुम पारब्रह्म हो । तुमारेकोमे
रीतुमसकारहै ॥ आगेमैतुमा
रेकोमतवंधीकराजानताथा ॥
अवमैतुमारेकोपरमेश्वरव
पकराजानताहो ॥ हूपरंब्रह्मजी

गु: गुरुदीक्षाकैसीहोवैहै॥कृ
१९ पाकरकेकहोजो॥देशुज्ञ
न॥तृयनहै॥४॥बहुतेभीघ
न्है॥नैतौमातापिताभीपं
न्है॥जिनकानेश्रेता४उ:

है ॥ जिन गुरु दीला प्रभुजी है ॥ प्र
भुजी न ॥ सारे हंसार का गुरु:
जगनाथ है ॥ विद्या का गुरु
बनारसी ॥ ब्रह्मचारे वर्णों का
गुरु ब्रह्मा लागा ॥ ब्राह्मण का

ग· गृहसंन्यासी॥ संन्यासी उसको क

४· हैहै॥ जिन सर्व कामनातिआग

करमेरे विषै मन जोडिआ है॥

सोब्रलागजगानग्रहहै॥ हैब्र

जैनेपेह्वातथिआनहैकर·

सतनेकीहै॥ ग्रहकेसाकरै॥ जि
नसबइंद्रीआजीतीआहै॥ जि
सकोसभसंसारईश्वररूपन:
जरीआवताहै॥ सर्वजगतनेउ
दासहै॥ ऐसाउगुरुकरेजोपरमे

गा· थकेनागातेबालाहोवे॥ति
१८ सगुरुकीमर्जासवतराकै॥
हैश्रेष्टतजोगुरुकाभगतहै
सोमेराभगतनहीं॥जोआपणेगु·
रुकेमतनमधहोकरमेराभज

नेकरतेहैं॥ तिनकाभजनकर-
नाम्हफलहै॥ जोप्राणीगुरांते
वेमुषहै॥ तिनकोसपतग्राम
मारेकापापहोताहै॥ तिनगु
रूतेवेमुषप्रानीकादरसन-

गा० करनाजोगाननहो। तिनकादर
११ सनचंडालकीतुलहै॥ जोगः
हस्तीगऊकुतेविनाहोई। सोचं
डालकेसमानहै॥ जिसनका
मनाकाभोजाहोई॥२ सविषे

गंगाजलपाईपे सो अपवित्रं
होवै है ॥ इसीतरां गुरुते विमुख
का भजन है ॥ सदा अपवित्र र
ता है ॥ तिसके हाथ का देया रव
ने भी न ही लेने ॥ तिसके सर्व क

ग॰
२३

मेंतिषफलहै॥ ग्रहतेवेसुबया
नीकाजनमभीतिसफलहै॥
कुकर॥ सूकर॥ गारदभ। काक
१ नमवैज्ञानोते सर्पघोडीजो
नेहै। १ नमवनातेघोटाहै॥ उह

मानघज्ञोगकृतनहोधावता ॥ ग
कृतोवैतागाननहोहोती ॥ श्र:
वशानरककोजावैगा ॥ गकृदी
ताविनापानीकेसर्वकर्मानि
फलहोतेहै ॥ हैवज्ञन ॥ चार:

ग.
२४ 25

बरतोकेमेरीभगतनकरतोयो
गपहै। तेमेगुरुधारकेगुरुको
भगतकरनी॥ सेवाकरनोगु
रुकीजोपाहै। सर्वनदीयोमें
गंगाश्रेष्ठहै। सर्ववर्तोमेएका

दशगोहेष्टहै ॥ नैमेसमभक्तभकोमी
मैगृहसेवाउनमहै ॥ गुरुदीक्षा
विनाप्राणी पसुजोनपावते
है ॥ जोधर्मभीकर्ताहै ॥ सोपसु
जोनमैफलभोगताहै ॥ वोग

ग. सीमेभरतायहिताहै।हेश्री
५५ कृष्णभगवानजीगरुडी·
ध्याकावालाहै।हेखजेतपं
नजमहैतेग।जितहिहप:
हियाहै।गरुडीध्याकेताम्र

नाहि । हमिरामा ॥ नश्चघोके
कहै ॥ हचावोव नोकेजप
ण श्रेष्ठ है । देय जे नजोग·
हकोमवाकारे है सोमेरीस
वाकरते है ॥ मेरी उहपापम

गा॰ २६ नताहै॥ चोरासीतेछुटजावेगा
जनममरनतेरहितनरकेन
हीभोगता॥ जोप्राणीगुरुसेवा
करेनहीसोसाढेतीनकरोड
वरसनरककोभोगताहै॥ जोगु

हसेवाकरताहैतिसकोकई·
श्रमसेपजगकाकोईकाफल
है॥गुरूकीसेवामेरीसेवाहै
हैब्रजेन॥इसमेरतेरसंवादः·
कोजोयानोपडेसुनेकमावै ४

ग॰ नेस्तोगर्भदोखनेवैवेग । चौरा
२७ सीकटजा१गी ॥ १ सौति १ स्वपा
टकानामनगर्भसेना है । श्रीकृ
ष्णमहाराजकेसमथने । श्रृजेन
तिस्त्रवाणकीहै ॥ ग्रहदीक्षा